

जुने लाक्मी स्वयंवर



४९६५१८० (०८)

(1)

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ कीर्तुरभ्योनमः॥॥
भानुदासकुक्तुष्टुप्तुभक्तिचेऽयेवज्ञाथनिजदेवतामुचेऽ
जन्ममृत्युसवक्लसिनिकार्त्ता वक्त्वा सबहुजनासिताहि
ते॥॥ ७॥॥ अं नमो जि लक्ष्माधा॥ गणेरसरस्वि
लिनामेंथरिता॥ तुंवित्वा॥ वता॥ क्रवणाओलांमिंशा
र्थु॥॥ तुंविअदिव्यज्ञावद्यजनन॥ सहजगुरुतुंजना
द्वृन॥ हृस्त्रवधेष्ठिलाविशिष्टना॥ निजात्मगुणगवया॥॥

८०

श्रुतिरात्रं औकाशीहृष्टा केऽन्नश्रवणा लोहोऽविज्ञवृजिवेधलि स्य० ऊ०
 जाए॥ कर्मकर्मिं आरदं उपगा लागतें आनश्चिमवि
 स्ति॥ वृक्षक्यागिं द्राघति ॥ अनवेलापरिश्चिति ॥ शिम
 विहरणश्चिपति ॥ कार्ये विद्युते केलें ॥ प्राक्षं करिलोहि
 ह्यएस्तिप्रश्ना तर्गिमित्यते ॥ जाए॥ वदनकथां मृत
 श्रवणा ॥ तें जीवनमज्जुसे ॥ विशेषहें दृस्त्वा वरात्रा
 तुसेनिसिद्धमुखें पवित्रा ॥ श्रवण करितां मासे श्रोत्रा ॥

(2)

The Rajavade Jaislamer Mandal, Shule and the
Professionals of the Royal Court
with Profound Praise and Honour

(2A)

आधिकाधिकभुक्तेले॥५॥ ईरकथानकेपुडि॥ नियन्त्रनई
दिगोडि॥ सेउंजाएतिआवडि॥ परापरथडिपावले॥६॥ दे
खोनिप्रश्नाचाहारम् वक्राशिजालासादरा॥ केसंवच
नबोलिलागंभिरा॥ हृषा रसाविं॥७॥ औंकैंवापाप
रिक्षिक्षि॥ तुंतवंसुरचास्ति॥ मुर्ति॥ भिमकिपाणिघहणस्थि
ति॥ येथानिगुतिसांगैना॥ अगावसुदेववियेनयप्राप्ति॥
क्रीहस्तदेववित्तदरायेति॥ हस्ताविजेहस्तशक्ति॥ जालि

३० उत्तरतिष्ठुमंडिः॥१०॥ केनकासवेंजैसिकांति॥ विश्वर्यास स्थापा
३ वेजैसिदिपि॥ नैसिआवतरलिहृस्त्राति॥ वैदर्भदेशिर
किमिणि॥१॥ जैसामुर्तिमन्तविवेत्र॥ तसाजाएराजाभिमत्र॥
(3) सहार्थिलाघनिसाहित्र॥ विवेत्रं गंगरोभत्॥१२॥ अद्य
लिशृङ्खमति॥ जोलिगर्भान्ते विवेत्रं नैधर्जन्मलिहृस्त्रभ
क्ति॥ चिन्द्रशत्रातिरक्षिणि॥१३॥ नवविधानेचिन्द्रमासा॥ ग
र्भान्ते लेशृङ्खदिवसा॥ सांगजन्मलिहृपसा॥ नवविधान

(3A)

दूर्किन्दिषि ॥१५४॥ पांचाविषयां चासे रटिं ॥ जेविसहुधितपजे
गोमटि ॥ तैसिपां चाहिथाकुटि ॥ जालिगोरटिहन्दिषि ॥१५५॥ जे
हुनिजन्मलिकुसि ॥ तैंहुनिअरडेरायासि ॥ अमान्यवरनि
पांचासि ॥ तैविधेविषट्टियं ॥ स्त्रीकृष्णसेनिजसुंदर ॥
लावर्येगुणंगुणंजिरुहि ॥ हिवसजालिथोरा वरवि
चाररायासि ॥१५६॥ तैधेविजित्तनामाक्रालए ॥ वायापासिंजा
लजाए ॥ तैएकेलेहुल्लकार्तन ॥ तैधेविजनुमनवधलें ॥१५७॥

३५०

४

(५)

वै सलिहो तिराया पासि ॥ सा हरदे रवौ नि क्षिम क्षिति ॥ मगव र्व० ३५०
 र्धि लें हरस्त्रकृपासि ॥ चित्तवृक्षपेशि साकार ॥ १५४ जाति गुण
 निर्विकार ॥ निष्कर्मनि ३५० चार ॥ तै चिजाला जिसाकार ॥ लि
 छाविग्रहिं कीत्तल ॥ २० ॥ सुंहरचरण न क्वे ॥ ३५१ मेत्र
 दिलारो त्यक्वे ॥ बाल सुग न उज्जाक्वे ॥ तै सिकव क्वे टां
 जाच्चि ॥ २१ ॥ अवजवज्ञां कुश उर्ध्वरेवा ॥ चरणि चिंहा मु
 दिक्षेदेवा ॥ नवर्णवे तिसहस्रमुखा ॥ ब्रह्मांदिकां अलक्षा
 ॥ ३५२ ॥

पिष्ठुनिर्दिनिकिविं॥ वोतलि श्री हृस्ततनूसा विं॥ १
उलेसकुमारकोविं॥ घोंटिलिलिंदोहिभागिं॥ २३॥ सुनिल
नभावियाकविक्षण॥ तेस्या आंगुलियादेरवा॥ वेरिनरवेल्याचं
द्रेरवा॥ चरणियुष्मालु असरा॥ ३५॥ सांडुनिकठिणाहाचं
दिंब॥ सचेतनमरकतत्त्वं॥ चरणजित्ययेंम॥ हृस्त
तिरिंश्चान्ता॥ २४॥ हृस्त आंगुजउलेपण॥ विजुसिपुरज्ञाले
खेगुण॥ विसरलअस्तमानज्ञाए॥ पिलांचरपणकातेसि
॥ २५॥

(4A)

० कि०

८

(5)

त्तेष्व-वरणा चेन्नितुष्टयोः ॥ वांकिने वेदा सिजाणिले उण्होः ॥ नेंन ख० अ० ०१
वंथरनिडेलिंमौन ॥ हेष्व-कीर्त्तन हे गजें ॥ २७ ॥ त्तोहं भावा चेनिग
जे० ॥ चरणिगर्जनि तुष्टये० मुग्धस ॥ मलनिदसुरे० ॥ योने० चै० ८
करीत से० ॥ २८ ॥ तोउरगजेंकरे० कनि० ॥ जन्म मरण हरि चरणि० ॥
ना हिं उपास काला गुनि० संव लभिकल्प गलिया० ॥ २९ ॥ अ० नेंन
हूपना वृक्षे वेदिं० नेंजा कविक्षेप विस हुद्दि० ॥ तैसि मेरव्वरमा
जा मध्यि० ॥ चिद्रल संधिं जउलि से० ॥ ३० ॥ त्तै पृद पावलि यांपारि०

The Rajawade Panjabian Mandal, Deoli and the Yashwant Rao Chavhan Project
Digitized by srujanika@gmail.com

जे विवृति होय कांउ पराटि॥ तैस्या किं अणि धूद घंटि॥ अधो
मुखें मै रव बा॥ ३५॥ अलि इयहि सा जहाना॥ होता अफि मा
न पंजानना॥ देखानि हूल मध्ये र बैचना॥ लौजा र नानो
गला॥ ३६॥ पाहा वया चूस सध्या र ना॥ चित्रि चित्रि लेपें जालिं जा
ए॥ संडुनि आंगि ज्याज्या ना॥ मरव के रवेवणा स्वये
जउले॥ ३७॥ नानि सिना मना झूनां हे उनि राखि लाविधा
ता॥ तैधि चापार धैं पाहातां॥ चिथाता हि ने ऐस्ति॥ ३८॥ हूले

(5A)

संक्षिप्ति

६

(6)

निषद्य नाभिना वा ॥ उदमि त्रैलोक्य सुन्दोवा जे विस्तारामा सूर्यो
जिरेवा ॥ तरंगा चायैं केला ॥ ३५ ॥ सागरीलहरीदिनकाविठ ॥ १
तैहि उदमि त्रिगुणात्रिकृष्ण कर्म तोमावविठ ॥ बहिर्मुखें
वाढिलिया ॥ ३६ ॥ नक्काहे हि मान ॥ उपनिषदां पडि
लमौन ॥ नैथं हि संचरल सुन्दर ॥ हेहा निमान सुन्दुनि ॥ ३७ ॥ ६
शून्यसुन्दुनि निराचकारा निवहस्त हदये सावकारा ॥ सुन्द
निकेला रहिवास ॥ वृत्ति शून्यहेतुनि ॥ ३८ ॥ निये पदिं जेसङ्गि

(6A)

ल॥ तेविजडिनयदकाजाण॥ मुक्तमोनिलगसंपूर्ण॥ गुणविणले
ईलासे॥ ३९॥ हानेवैराग्यसुक्रिसंपटिं॥ निषजलिंमुक्तमोनियेगा
हिं॥ तेविधेकाबछिकंठिं॥ रोभता॥ ४०॥ जेनविजनसमा
नकला॥ तेविजापदवनमा॥ अंतिविजशानिनिर्मला॥ रोभे
गल्वावैजयंति॥ ४१॥ अंकरामासकट॥ तेविजापाकाकंसु
कंरमेवहाचेंजेमुक्तिरा॥ तेशुनिष्रगटत्रिकांडि॥ ४२॥ रवाणोनि
उपनिषदात्मिरवाणि॥ अर्थकाढिलोरोधुनि॥ तेविकंठिंकौल

संक्षिप्त

६

(२)

७

भमणि॥ निज किरणि सक वन॥ ४३॥ गगन गज ते शूद्र दाहंड॥ तै ८०७॥
स सरब बोहु दंड ५४ परा त्रि में चुलि पुरुंड॥ अनयदा ना उहि त्रा॥ ४४॥
पंच भूते निज जानि न्न॥ ते या आगो वियज्ञा ए॥ नव हात लो अ
शिष्ट न॥ पांच हि मिक तिथे र बुझे॥ ४५॥ त्रहुं रवा धि क्रि पाजा ति॥
स्याति आहि भुजा रो भैति॥ देव स विलिं हा ति॥ वरणि ये
स्थिति पाहा पां॥ ५६॥ अस्य न ते जंते ज्ञा का र॥ देव द वलि स ते ज
था र॥ ते विध गधि त चत्र॥ अरि मर्द नि उङ्गट॥ ५७॥ घाये अ

Digitized by
Rajiv Gandhi
National Library and
Museum
Prof. P. G. Verma
Central Sanskrit
University, Varanasi

४८) जिमानकरैचेदा॥तेष्वि सबकरतयैंगदा॥निः राहिंउठवितश
हृ॥वेदानुवादायांचजन्यु॥४९॥जस्तेदभलमजेटानि॥तेकों
सुमनेंकैंविशिष्टिलिनातया॥सुजेलाग्निहातिं॥हदयकमळका
हानुसे॥५०॥बाहिंकाहुचटविति॥मुद्देवं॥ज्याहिवेदजालेसु
रवं॥क्रृष्णकर्त्तुतमाहि॥वार्त्तकांतवेदांत॥५१॥येंत्र
उभवणिउपासका॥स्याचिजंगोक्तियामुदिका॥त्रिकोएष
टकोएकर्त्तिकाभजेहितमाहिकाअगमोत्तर॥५२॥पूर्वेनरसि

रुक्मिणि

पांसा हो न्हि । कुंडले जालि हृष्ट श्रवणि ॥ उपनिषद् वार्षीकीर
णि ॥ सत्र ब्रह्मानि सने जोंग ॥ ये कल्पणा नि साकार ॥ ये कल्पणा
नि मकरा कार ॥ परि ते साकार ना निर्विकार ॥ श्रवणे विकार
भाव वनि ॥ १३॥ गवुनि पांसा हृष्ट सुखि ॥ तेथि जासु सातनि
हरि रवा ॥ तेथि विकल्पा चंकी सु नित्यनि देवमिरवन ॥ १४॥
उपेष्ठं द्रुलिला गहन गता तव हृष्ट पश्चिं होय शिषा ॥ उदो
अस्त्रारिण सपूर्ण ॥ वदने दुहृस्तर च ॥ १५॥ जिवशिव घेका

(8)

८

Digitized by
Rajmohar Sanjeevan Mandal, Dhule and the
Liberation Project, Mumbai

कारा॥ तैसे मिन्ने लेदो न्हिं अधरा॥ माजि दंत पंक्ति ने जाकारा॥ चि
दानंदे शब्द बनि॥ इना सिक्का दे उनि ना स्त्रिका॥ उंचावे लेने
ना शिका पवन हिंडनां पवल दरा॥ हस्त स्त्री सेंसु रिंजाला
॥ ५॥ विश्वाल डोबे श्रद्धा चे न थें विस्तावे औले पाहा ते
पाहा ले॥ जाप आप छिया॥ त्यहे॥ सबा ह्या भयंत परे॥ स २
मद्दृष्टि॥ ५॥ इन अहा ना चिपाति॥ मिथ्या परे लवत होति॥
तहि साहनि मागुति॥ सहज स्थिति पाहा न से॥ ६॥ अधिष्ठान

(8A)

तात्क्रिया

८

(9)

९

विश्वावभाविं॥ तेषि रोमा वृक्ष कपविं॥ सच्चिदानन्दये क्रेमे स्वर्जा०१
जिं॥ तेषि चिविविललहाटिं॥ उगाकुनिजा हंकडिणप
रा॥ सो हंकाडिले मुद्गरं दन्॥ तेषि वैले वृक्षार्पण॥ निजभा
विं मविवट॥ ५॥ तस्युगम् ३॥ रसाक्षा॥ तेषि सत्तविचेकेह
कुरक्ष॥ वृक्षमुखे विमुखे ४॥ अथो वदने धाविनले॥
॥ ५॥ हलेणो निष्ठे क्षयाविष्ठे मुष्ठि॥ आणो निबांधलिविरु
ठि॥ सहजभावाचामुकुटिं॥ मगदाटले सुबथग॒५॥ तया



Joint Project of
Sachin de Saram
and the Veerappa
Chaitanya
Library
Mumbai
Number:

(9A)

मुकुटाचात्वरेटि ॥ मुक्लमयोरपत्राचिवेदि ॥ कैसिरोभग्नोहेगोमटि ॥
हव्यहृष्टिं अनितं इ ॥ सलोकसमिष्टहस्तपता ॥ लेनवधिसंस्थान्ति सर्व
था ॥ हेरवणेपणं विलुडे व्यस्तामने चिनाध्यांतवर्व ॥ इ ॥ जेकंकारा
माजिआवडि ॥ जेथेंशीद्धासरजाधिकगोडि ॥ लेचिलांगोंविसर
लोंकुडि ॥ चूकिगढिपउलिरु ॥ सकब्भूवणावें भुवण ॥ क्रासु
ए ॥ खादक्षएन्दरए ॥ हद्दिबोहेनरायए ॥ श्रीवचलांचनगोविंद
॥ इ ॥ हृष्टाचिद्याश्रीमृत्पलावण्डाजालेंक्रिजगनि ॥ वरव्याव

सूक्ष्मणि

१०

(१०)

२ वाक्षीयति ॥ बाजा किति अनुकादे ॥ ५८ ॥ जेजें असंत सुंदर दि से ॥ ४० अ० ५
तें तें वस्त्रो च निले रें ॥ डो छ यागे रें लावि ले दि से ॥ ज्ञालि मो रवि से
हरि जांगि ॥ ५९ ॥ सो दर्या च अभिसाका मदन आजांगि होला संदूर
तु लों दे रो निश्ची हाला र रहा सि विटला ॥ ६० ॥ मदने श्री हाल
दे रिला सांग ॥ आंग जावुटि जान ने ग ॥ यो दाये उलियांचां ॥ ६०
ग ॥ उत्तमांग पावला ॥ ६१ ॥ बे रे पैलि मोटि ॥ होते लह्मि चाफे टिं
हाल दे रो नियांदि टि ॥ ते हि उत्तरा टिला जिलि ॥ ६२ ॥ कृष्ण भावु

The Ratnadev Sambhan Manuscript and the Yashwantrao Chiplunkar Project
Digitized by srujanika@gmail.com

(10A)

नियोक्तैसि॥२मा जालिपरमयिसि॥लद्मीनावेदेवासि॥जालि
दासिपायांत्रि॥७३॥हृष्टदेविलाङ्गदिठि॥तेष्टतोनिमागुतेनु
ठि॥जाधिकाधिकधालिमिठि॥होयेसल्लिनहरिरूपि॥७४॥
हृष्टपाहावयाचालोभा॥तयनानयनिधनिजिभा॥श्रव
णंश्रवणाहिवल्लभा॥ब्रह्मिश्चाभावस्त्रावि॥७५॥हृष्टर
सजेसेवित॥तयासिद्धिकेहोयेअमृत॥अमर्जमृतोत्तेवित्
तेहित्तरक्तित्तरस्ता॥७६॥श्रीघारवाणिअस्तरुद्गु॥हृष्ट



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com